15 जनवरी, 2026 न्यूजलेटर

क्रमांक

1

शिक्षा मंत्रालय
Ministry of
Education
सत्यमेव जयते

भारत सरकार
Government of India

उन्नत भारत अभियान
Unnat Bharat Abhiyan

उन्नत भारत अभियान

उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम

राष्ट्रीय समन्वयक संस्थान- आई.आई.टी. दिल्ली

सफलता की कहानियां:

- उन्नत भारत अभियान का काम 'एक जिला एक उत्पाद' योजना में चयनित।
- बायोगैस तकनीक ने समस्या को समाधान में परिवर्तित किया।
- जनजातीय गांव में सोक पिट (सोखता गड्ढा) का सफल प्रयोग।
- बांस की कोंपलों से बनाए बेशुमार उत्पाद।
- बायोफिल्टर से रसोई का गंदा पानी हुआ साफ।

कार्यक्रम एवं गतिविधियां:

- विद्यार्थियों के लिए सहायक सामग्री तैयार करने में उन्नत भारत अभियान की पहल।
- यूजीसी के साथ फैकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोग्राम।

- पंचायतों की मजबूती के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- नए प्रतिभागी संस्थानों (PIs) के लिए देश भर में कार्यशालाओं का आयोजन
- कार्बन क्रेडिट कमाने की रणनीतियों पर विमर्श।

अभिमत

"गाँवों की समस्याओं का स्थायी तकनीकी समाधान ढूंढने में उन्नत भारत अभियान बड़ी भूमिका निभा रहा है। हमारे देश के दूरदराज के गाँवों में कई जरूरतमंद लोग इससे व्यापक रूप से लाभान्वित हुए हैं।"

- डॉ. एस. कनगराज
समन्वयक, उन्नत भारत अभियान,
अमृता विश्वविद्यापीठम

"उन्नत भारत अभियान के तहत हमारी यात्रा प्रभावशाली अनुभवों से भरी रही है। इसके चलते न केवल जमीनी स्तर पर सकारात्मक बदलाव हुए हैं, बल्कि सामाजिक रूप से एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमारा अपना नजरिया भी विकसित हुआ है।"

- आदित्य
छात्र समन्वयक, उन्नत भारत अभियान
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT), रायपुर

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली का संगम हो।

उन्नत भारत अभियान के पाक्षिक न्यूज़लेटर के इस पहले अंक को आपके साथ साझा करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। देश भर में हमसे जुड़े प्रतिभागी संस्थानों, संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों, समाजसेवियों और शुभचिंतकों के बढ़ते हुए समूह को आपस में जोड़ने, तथा उन्हें सूचित और प्रेरित करने में इस न्यूजलेटर की बड़ी भूमिका होने वाली है।

उन्नत भारत अभियान की शुरुआत इस दृढ़ विश्वास के साथ की गई थी कि देश भर में फैले उच्च शैक्षणिक संस्थान ग्रामीण भारत की चुनौतियों का समाधान ढूंढने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पिछले कुछ वर्षों में, उन्नत भारत अभियान एक जीवंत राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में विकसित हुआ है जिसके माध्यम से उच्च शिक्षा के हजारों संस्थान गाँवों के साथ सीधे जुड़ रहे हैं, समुदायों से सीख रहे हैं, और समाधानों की एक ऐसी शृंखला प्रस्तुत कर रहे हैं जहां स्थानीय आवश्यकताओं की समझ के साथ आधुनिक विज्ञान और सहभागी दृष्टिकोण का सुंदर सामंजस्य दिखाई देता है। 'अनुभवात्मक शिक्षा' (experiential learning) हमारे अभियान की मुख्य विशेषता है। गाँवों के साथ सीधे जुड़ाव के

माध्यम से, छात्र और शिक्षक कक्षाओं से बाहर निकल कर गांवों की वास्तविक समझ हासिल करते हैं। सहानुभूति, समस्या-समाधान कौशल और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को विकसित करते हुए यह प्रक्रिया शैक्षणिक अनुभव को समृद्ध बनाती है। उन्नत भारत अभियान यह स्वीकार करता है कि गांव की समस्याओं का समाधान ढूंढने में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली की भी बड़ी भूमिका है। विरासत, संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान की समझ के बिना हम गांव की समस्याओं का कोई स्थायी समाधान नहीं दे सकते। जिस ज्ञान और अंतर्दृष्टि को हमारे बुजुर्ग मौखिक परंपरा में अभी तक संभाले हुए हैं, वह लुप्त हो जाए, उसके पहले उसे सहेजने की जरूरत है। उन्नत भारत अभियान इस दिशा में एक उदाहरण प्रस्तुत करे, इसके लिए हम सबको मिल-जुलकर प्रयास करना होगा।

इस सोच को जमीन पर उतारने के लिए हमारे प्रतिभागी संस्थान (पी.आई.) क्या कर रहे हैं तथा उन्हें सहयोग देने के लिए आर.सी.आई, एन.सी.आई. सहित अन्य एजेंसियों द्वारा क्या किया जा रहा है, इन सब बातों को जानने समझने के लिए इस न्यूजलेटर की शुरुआत की जा रही है। इस सबके बीच हम शिक्षकों के समर्पण और विद्यार्थियों की ऊर्जा और रचनात्मकता को भी उजागर करेंगे क्योंकि वही तो हमारे अभियान की आत्मा हैं। हम अपने हर-एक कदम के साथ सहभागी, समावेशी और टिकाऊ विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराएंगे ताकि गांवों में संस्कृति और समृद्धि का एक नया सवेरा आ सके।

- प्रो. वीरेंद्र कुमार विजय
राष्ट्रीय समन्वयक, उन्नत भारत अभियान,
आई.आई.टी. दिल्ली

उन्नत भारत अभियान का काम 'एक जिला एक उत्पाद' योजना में चयनित।

मशरुम तोड़ते किसान

हरिद्वार के गैंडीखाता में हाथियों के हमलों और मौसमी बेरोजगारी के कारण खेती-किसानी की व्यवस्था चरमरा गई थी। आईआईटी दिल्ली की उन्नत भारत अभियान (UBA) टीम ने वर्ष 2017 से यहां के चार गाँवों में काम शुरू किया। सबसे पहले स्थानीय लोगों के साथ मिलकर एक 'ग्राम विकास योजना' तैयार की गई। तय हुआ कि लेमनग्रास की खेती की जाए। इस खेती ने जहां परित्यक्त भूमि को पुनर्जीवित किया, वहीं हाथियों को भी दूर कर दिया। इसी के साथ किसानों की आय को निरंतरता प्रदान करने के लिए इनडोर मशरूम की खेती को बढ़ावा दिया गया। इससे ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए पूरे वर्ष भर के लिए रोजगार पैदा हुआ।

इस पूरी प्रक्रिया में आईआईटी दिल्ली के 10 छात्र हर कदम पर शामिल थे। कम्पोस्ट आपूर्ति श्रृंखला डिजाइन करने, कम लागत का ग्रो-हाउस बनाने, प्रशिक्षण सामग्री विकसित करने और

बाजार डेटा को ट्रैक करने जैसे हर काम को उन्होंने नियोजित किया। इस अनुभव ने उनकी शैक्षणिक यात्रा को वास्तविक ग्रामीण परिवेश से जोड़ा। सच कहें तो इस काम ने उन्हें सामान्य इंजीनियर से एक 'नैतिक इंजीनियर' में तब्दील कर दिया। इस सफल प्रयोग को जिला प्रशासन द्वारा हरिद्वार के लिए 'एक जिला एक उत्पाद' (ODOP) योजना के तहत मान्यता भी दी गई है।

बायोगैस तकनीक ने समस्या को समाधान में परिवर्तित किया।

PI: आई.आई.एम.टी विश्वविद्यालय | RCI: आईआईटी रुड़की | राज्य: उत्तर प्रदेश | जिला: मेरठ | फैकल्टी: डॉ. शुभा द्विवेदी, डॉ. रितु बत्रा | समयावधि: 2020–जारी | कवर किए गए गाँव: 5 | शामिल छात्र: 2 | ग्रामीण लाभार्थी: 30+ (प्रारंभिक उपयोगकर्ता, स्टाफ)

मेरठ के आई.आई.एम.टी विश्वविद्यालय में उन्नत भारत अभियान सेल ने कैंपस-आधारित बायोगैस के माध्यम से प्रचुर मात्रा में जैविक कचरे को टिकाऊ ऊर्जा में बदल दिया। काम की शुरुआत 2020 में संवाद और सहभागी ग्राम जुड़ाव के साथ की गई। इसके बाद फैकल्टी और छात्रों ने कचरा प्रबंधन और ऊर्जा आवश्यकताओं के बीच संबंध की पहचान की और बायोगैस के माध्यम से इसमें हस्तक्षेप का निर्णय लिया। एक मध्यम स्तर का बायोगैस संयंत्र लगाया गया जो अब गोबर और रसोई के कचरे को खाना पकाने के ईंधन और जैविक खाद में परिवर्तित कर रहा है। इससे एलपीजी के उपयोग में कमी हुई है और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। छात्रों ने सिस्टम

डिजाइन और विश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह परियोजना परिसर में रह रहे लोगों को लाभ पहुँचाती है, फसल की पैदावार बढ़ाती है, उत्सर्जन कम करती है और गांवों में लगाने के लिए एक स्केलेबल मॉडल प्रस्तुत करती है।

जनजातीय गांव में सोक पिट (सोखता गड्ढा) का सफल प्रयोग।

PI: ए.जे.के. कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, पलक्कड़, कोयंबटूर, समन्वयक: डॉ. एम. जैस्मिन प्रिया; परियोजना अन्वेषक: डॉ. आर. श्रीधर, SEG: तरल अपशिष्ट प्रबंधन

कोयंबटूर के पुथुपति गाँव में लगभग 54 घर हैं। यहां घरेलू सीवेज के खुले बहाव के कारण गंभीर स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संकट पैदा हो गया था। उन्नत भारत अभियान के तहत शिक्षकों और विद्यार्थियों ने समुदाय के साथ मिलकर इसे ठीक करने की एक योजना तैयार की। इसके तहत एक छिद्रयुक्त दीवार वाली 'सोक पिट' बनाई गई जिसे जल निकासी प्रणाली से जोड़ दिया गया। गंदे पानी के प्रभावी उपचार के लिए लाभकारी माइक्रोबियल कल्चर का उपयोग किया गया। संकाय और छात्रों ने मूल्यांकन से लेकर निगरानी तक परियोजना के हर चरण का नेतृत्व किया, जिसमें समुदाय और पंचायत की भी

मजबूत भागीदारी रही। इस पहल के बाद गांव में स्वच्छता में सुधार हुआ है जिसके कारण स्वास्थ्य और पर्यावरणीय खतरे कम हुए हैं। अब उपचारित पानी का उपयोग नजदीक के ही एक औषधीय उद्यान में सिंचाई के लिए होता है। इस प्रकार यहां ग्रामीण व जनजातीय स्वच्छता के लिए एक अनुकरणीय मॉडल तैयार किया गया है।

बांस की कोंपलों से बनाए बेशुमार उत्पाद।

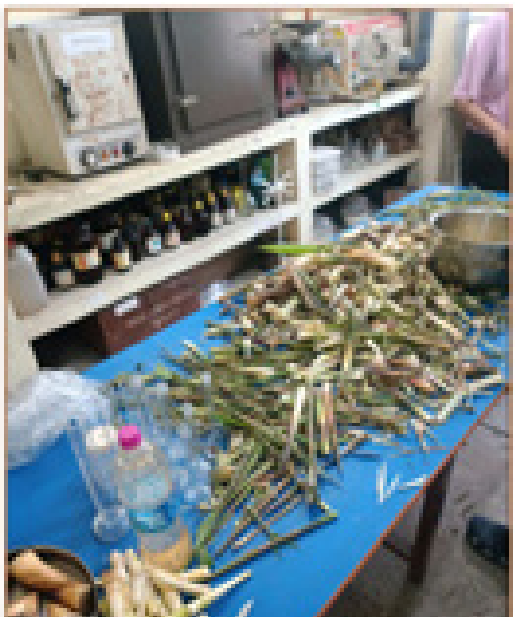

PI: उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (NERIST), PI समन्वयक: डॉ. थानेश्वर पटेल, SEG: टिकाऊ कृषि प्रणाली।

उत्तर पूर्वी भारत के जनजातीय समुदायों में बांस की कोपलों (Bamboo shoots) का बड़ा सांस्कृतिक महत्व है और यह वहां का एक बहुत अच्छा पोषक आहार भी है। खास मौसम में इसकी अच्छी पैदावार भी होती है। किंतु सुरक्षित रखने की व्यवस्था न होने के कारण अधिकतर पैदावार नष्ट हो जाती है। उन्नत भारत की टीम ने इस चुनौती से निपटने के लिए अपनी योजना बनाई। कटिंग मशीन, वजन करने वाली मशीन और हैंड सीलर जैसे सरल उपकरणों का उपयोग करके एक कम लागत वाला, ग्राम-स्तरीय प्रसंस्करण मॉडल तैयार किया। इसी

के साथ मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के लिए पारंपरिक कार्यों जैसे धोने, छीलने आदि को मानकीकृत किया गया। इस नई प्रक्रिया को अपनाते हुए बांस की कोंपलों से कई पैकबंद, डिब्बाबंद उत्पाद तैयार हो रहे हैं जिससे इसकी शेल्फ लाइफ और विपणन क्षमता में सुधार हुआ है। परियोजना पर काम करते समय, देशज ज्ञान को वैज्ञानिक इनपुट के साथ एकीकृत किया गया। परिणामस्वरूप, आज मौसमी बांस की कोंपलों को साल भर आय देने वाले उत्पादों में बदल दिया गया है। अब फसल की बर्बादी बहुत कम हो गई है और जनजातीय लोगों की आमदनी में भी वृद्धि हुई है।

बायोफिल्टर से रसोई का गंदा पानी हुआ साफ।

PI: आर.एम.के. इंजीनियरिंग कॉलेज, अवराईपेट्टाई, तिरुवल्लुर, PI समन्वयक: डॉ. एम. मीना, SEG: तरल अपशिष्ट प्रबंधन: लाभार्थी- दो ग्रामीण स्कूल।

इस परियोजना के तहत एक गुरुत्वाकर्षण-आधारित बायोफिल्टर तैयार किया गया है जिसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध सूखी पत्तियों और खोलों (shells) को सक्रिय कार्बन (activated carbon) के रूप में उपयोग किया गया है। यह बायो-एब्जॉर्बेंट पर्यावरण के अत्यंत अनुकूल है। इसके द्वारा रसोई के गंदे पानी से तेल, जैविक पदार्थ और निलंबित अशुद्धियों को

प्रभावी ढंग से हटा दिया जाता है। जो पानी उपचारित होकर बाहर आता है, उसका सुरक्षित रूप से फर्श की सफाई और बागवानी के लिए पुन: उपयोग हो जाता है। इससे ताजे पानी की खपत में काफी कमी आई है। इस परियोजना में शामिल 15 इंजीनियरिंग छात्रों और 4 फैकल्टी सदस्यों को इस प्रयोग से गांवों की वास्तविक जल प्रबंधन चुनौतियों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम एवं गतिविधियां

विद्यार्थियों के लिए सहायक सामग्री तैयार करने में उन्नत भारत अभियान की पहल।

उन्नत भारत अभियान से जुड़े विद्यार्थियों के लिए टेम्पलेट और अध्ययन सामग्री विकसित करने की दिशा में गंभीर पहल करते हुए अभियान के राष्ट्रीय समन्वयक संस्थान IIT दिल्ली द्वारा 13 दिसंबर 2025 को हाइब्रिड मोड में SEG समन्वयकों की बैठक आयोजित की गई।

बैठक में तय किया गया कि सब्जेक्ट एक्सपर्ट ग्रुप की ओर से 'ग्राम अध्ययन संदर्भ कोश', 'प्रासंगिक प्रौद्योगिकी टेम्पलेट' के साथ कुछ अन्य अध्ययन सामग्रियां भी तैयार की जाएंगी जिससे उच्च शैक्षणिक संस्थानों के पाठ्यक्रम को उन्नत भारत अभियान

के आलोक में नए सिरे से पुनर्गठित किया जा सके। जो दस्तावेज तैयार किए जाएंगे उनमें स्थानीय समुदायों में जाकर की जाने वाली गतिविधियों का एक व्यवस्थित संकलन होगा।

यह संकलन मानविकी, विज्ञान, समाज विज्ञान, प्रबंधन, कानून, इंजीनियरिंग सहित सभी धाराओं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगा। यहां उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने हाल ही में उच्च शैक्षणिक संस्थानों के लिए 2-क्रेडिट कोर्स वाला एक पाठ्यक्रम स्वीकृत किया है जो "सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक जुड़ाव का संवर्धन" पर केन्द्रित है। इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप विद्यार्थी अपने विषय और भौगोलिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त गतिविधियों का सुगमता पूर्वक चयन कर सकेंगे।

यूजीसी के साथ फैकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोग्राम।

यूजीसी ने उन्नत भारत अभियान के साथ मिलकर 2 क्रेडिट का कोर्स शुरू किया है जिसका नाम है- "सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक जुड़ाव का संवर्धन"। अपने प्रयास को आगे बढ़ाते हुए UGC ने अभी हाल ही में UBA के सहयोग से 'कम्युनिटी बेस्ड पार्टिसिपेटरी रिसर्च' पर 6 दिन के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया जो मुख्यतः निम्न बिंदुओं पर केन्द्रित था-

1. समुदायों के साथ मिलकर काम करने की विविध प्रणालियों पर गहराई से प्रशिक्षण देना।
2. फैकल्टी मेंबर्स को सामाजिक उत्तरदायित्व और समुदायों के साथ स्थायी भागीदारी विकसित करने के लिए जागरूक करना।
3. प्रतिभागियों को इस बात के लिए तैयार करना कि वे न केवल अपने संस्थान में बल्कि अपने आस-पास के इलाके में

भी मेंटर और मास्टर ट्रेनर के रूप में काम करें ताकि ज्ञान का अधिकाधिक विस्तार हो सके।
4. UBA के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पंचायतों, स्थानीय शासन की अन्य इकाइयों और जमीनी स्तर पर होने वाले नवाचार के साथ अकादमिक जुड़ाव को मजबूत करना।

पंचायतों को मजबूत करने के लिए पांच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से उन्नत भारत अभियान ने अपने क्षेत्रीय समन्वय संस्थान (IIT जोधपुर) के माध्यम से और राजस्थान सरकार के पंचायती राज विभाग के सहयोग से 02–06 दिसंबर 2025 में पांच दिवसीय आवासीय प्रबंधन विकास कार्यक्रम आयोजित किया।

विकसित राजस्थान और विकसित भारत @2047 की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए इस कार्यक्रम में सभी जिलों के 30 वरिष्ठ अधिकारियों को पंचायत-स्तरीय प्रशासन को मज़बूत बनाने के लिए ट्रेनिंग दी गई। इस दौरान एक्सपर्ट लेक्चर के साथ गाँवों में जाकर अनुभव लिया गया। इसी के साथ यह भी बताया गया कि डिज़ाइन थिंकिंग जैसे भागीदारी वाले तरीकों का इस्तेमाल करके किस प्रकार तथ्य आधारित प्लानिंग, कम्युनिटी जुड़ाव और संस्थागत तालमेल को बेहतर बनाया जा सकता है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने स्थायी ग्रामीण विकास के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों को राज्य प्रशासन से जोड़ने वाला एक ऐसा प्रयोग किया है जिसे राष्ट्रीय मॉडल के रूप में पूरे देश में अपनाया जा सकता है।

नए प्रतिभागी संस्थानों (PIs) के लिए क्षेत्रीय समन्वयक संस्थानों (RCIs) द्वारा कार्यशालाएं

RCI (क्षेत्रीय समन्वयक संस्थानों) द्वारा PI (प्रतिभागी संस्थानों) के लिए नियमित ओरिएंटेशन वर्कशॉप आयोजित की जा रही हैं ताकि पीआई को उन्नत भारत अभियान के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में बताया जा सके। राष्ट्रीय समन्वयक संस्थान (NCI) के साथ मिलकर RCI फील्ड से मिले अनुभव और सीख को साझा करते हैं। वर्कशाप में डॉक्यूमेंट जमा करने के लिए मुख्य प्रशासनिक नीतियों और अन्य उपायों के बारे में भी बताया जाता है जिससे प्रक्रिया को सुगम बनाया जा सके।

कार्बन क्रेडिट कमाने की रणनीतियों पर विमर्श

18 दिसंबर 2025 को उन्नत भारत अभियान के तहत RCI-NITTTR (National Institute of Technical Teachers Training and Research) चंडीगढ़ द्वारा एक क्षेत्रीय वर्कशॉप का आजोजन किया गया जिसमें उत्तर-पश्चिमी भारत में टिकाऊ खेती और वानिकी के ज़रिए कार्बन क्रेडिट कमाने की रणनीतियों पर विमर्श किया गया। इस वर्कशॉप में नाबार्ड, वन विभागों, शिक्षाविदों और UBA संस्थानों के 26 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। विशेषज्ञ सत्रों में कार्बन बाज़ार तंत्र, MRV सिस्टम और जलवायु-स्मार्ट तरीकों जैसे एग्रोफॉरेस्ट्री, AWD, DSR और बायो-चार को आसान भाषा में समझाया गया। केस स्टडीज़ के तौर पर स्केलेबल, किसान-केंद्रित मॉडल दिखाए गए। इस वर्कशॉप ने जहां एक ओर संस्थागत तालमेल को मज़बूत किया, वहीं इस बात पर भी प्रकाश डाला कि किस तरह पूरे देश में आय-सृजन आधारित ग्रामीण विकास को गति देने में UBA की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

आंकड़ों की जुबानी

उन्नत भारत अभियान

4666	प्रतिभागी संस्थान। (PIs)
17006	ग्राम पंचायतें और ~22000 नेटवर्क गाँव।
35	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश।
605	जिले।
13	सहयोग और समझौता ज्ञापन (MoU)।
15	विषय विशेषज्ञ समूह (SEGs)।
543	तकनीकी हस्तक्षेप (प्रतिभागी संस्थानों द्वारा गांवों में) किए गए।
50	क्षेत्रीय समन्वय संस्थान (RCIs)।

प्रमुख सहयोगी-

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार
पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
NECTAR, YOJAK, आदि।

॥ धन्यवाद ॥

राष्ट्रीय समन्वयक कार्यालय, उन्नत भारत अभियान द्वारा संकलित

-विनम्र निवेदन-

किसी भी सुझाव या फीडबैक के लिए कृपया हमें लिखें

उन्नत भारत अभियान
ब्लाक-V-405, आई.आई.टी. दिल्ली कैम्पस
हौजखास, नई दिल्ली- 110016
unnatbharatabhiyaniitd@gmail.com,
unnatbharat@admin.iitd.ac.in
https://unnatbharatabhiyan.gov.in/